मधुबन ओम् शान्ति अंक 262 मई 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(06-04-14)

दिल के दिलाराम प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा सहयोगी, परमात्म प्यार और दुलार की अनुभवी आत्मायें, सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सबकी सूक्ष्म स्नेह भरी सकाश मिलती रहती है। बापदादा और आप सबकी दुआओं से धीरे-धीरे दर्द कम होता जा रहा है। ड्रामा की हर न्यारी प्यारी सीन में बाबा अनुभवीमूर्त बनाता रहता है। अभी तो बाबा की यह सीज़न पूरी हुई। बाबा ने अपनी स्नेही मूर्त से सबको खूब भरपूर किया। अनेक वरदानों से झोली भरी। बाबा की एक ही मीठी मुरली कितने गुह्य राज़ स्पष्ट कर देती है। लास्ट में बाबा ने हम सबको यही होमवर्क दिया है कि बच्चे,

* कितनी भी छोटी मोटी रूकावटें आयें लेकिन बाप के प्यार और नॉलेज के आधार से निर्भय बन आगे बढ़ते रहना।
* कभी किसी भी वायुमण्डल के प्रभाव में नहीं आना, सदा बाप के स्नेह और सहयोग का अनुभव करते रहना।
* एक दो की विशेषता को देखना, कमजोरी की बातों को नहीं देखना।
* सदा तीव्र पुरुषार्थ के उमंग-उत्साह में रहना और अपने साथियों को भी उमंग-उल्हास का अनुभव सुनाते उन्हें उमंग-उत्साह में लाना। हर एक के प्रति सदा शुभ भावना रख एक दो के सहयोगी बनना।
* वायुमण्डल क्या भी बनें लेकिन आप अपने वायुमण्डल से वायुमण्डल को परिवर्तन करना, कभी पुरुषार्थ में ढीले नहीं पड़ना, विजयी बनना और विजयी बनाना। बहादुर बनना और बहादुर बनाना।
* हिम्मत कभी नहीं हारना। हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही इसलिए बापदादा के जो भी डायरेक्शन हैं उस पर सदा अटल रहना, नम्बरवन बनने का लक्ष्य रखना।

बोलो, मीठे बाबा के ऐसे मधुर वरदानी बोल सुनते, उन्हें प्रैक्टिकल स्वरूप में लाते सदा उड़ती कला का अनुभव कर रहे हो ना! अब तो वार्षिक मीटिंग में भी चारों तरफ के मुख्य भाई बहिनें पहुँच रहे हैं। पूरे वर्ष के लिए स्व-उन्नति और सेवा के प्लैन्स बनेंगे ही। फिर उसी अनुसार मधुबन, ज्ञान सरोवर और शान्तिवन में अनेक प्रकार की वैरायटी सेवाओं के कार्यक्रम शुरू हो जायेंगे। करनकरावनहार बाबा गुप्त रूप में सब कुछ करते कराते अपने बच्चों को आगे रख बेहद सेवाओं में सफलता मूर्त बनाता रहता है। इस बार तो देश विदेश से हजारों भाई बहिनें हर ग्रुप में आये और खूब रिफ्रेश होकर गये हैं। सब मधुबन के बहुत अच्छे अच्छे अनुभव लिखकर भेजते रहते हैं। बाबा का यह बेहद यज्ञ पवित्रता और सत्यता के आधार से आगे बढ़ता आया है, बढ़ता रहेगा।

बाकी मीठे बाबा का अब यही इशारा है कि बच्चे दुनिया की हलचल की हर सीन को साक्षी दृष्टा बन देखते हुए, साथी को सदा साथ रख अचल अडोल रहना। अपनी श्रेष्ठ वृत्तियों द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने के लिए मन्सा सकाश देने की सेवा करते रहना। अच्छा!

सबको हमारी बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद प्यार देना जी।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

विघ्नजीत बनो और निर्विघ्न वायुमण्डल बनाओ

1) मैजारिटी के सामने सर्विस में बाधा डालने वाला मुख्य विघ्न आता है – मैंने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ... यह मैं-पन आना इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान, इन रूपों में ही विघ्न आते हैं। इस प्रकार के विघ्नों को समाप्त करने के लिए सदा एक शब्द याद रखना कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से ही निराकारी, निरंहकारी और नम्रचित, निसंकल्प अवस्था में रह सकते हैं, यही धारणायें वायुमण्डल को निर्विघ्न बना देती हैं।

2) किसी भी बात का सामना करने के लिए कामनायें बीच में विघ्न डालती हैं। जब कामना रखते हो मेरा नाम हो, मैं ऐसा हूँ, मेरे से राय क्यों नहीं ली गई, मेरा मूल्य क्यों नहीं रखा गया! ऐसी अनेक प्रकार की कामनाएं सामना करने में विघ्न रूप बनती हैं इसलिए याद रखना हमें कोई भी कामना नहीं करनी है।

3) विघ्नजीत बनने के लिए हर एक को तीन बातें छोड़नी हैं, एक तो कभी भी कोई बहाना नहीं देना। दूसरा कभी भी किससे सर्विस के लिए कहलाना नहीं, तीसरा – सर्विस करते कभी मुरझाना नहीं। इसके साथ तीन बातें धारण करना - त्याग, तपस्या और सेवा।

4) पुरुषार्थ करते-करते जो माया के विघ्न आते हैं उन पर विजय प्राप्त करने के लिए एक स्लोगन याद रखना कि ''स्वर्ग का स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है'' और संगम के समय ''बाप का खजाना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है''। जब अपने को अधिकारी समझेंगे तब माया के अधीन नहीं होंगे।

5) कोई भी बड़े से बड़ी परीक्षा में पास होने के लिए परखने की शक्ति चाहिए। जब पहले से परख लेंगे कि किस प्रकार का विघ्न है वा माया किस रूप में आ रही है? इसकी रिजल्ट क्या होगी! तो परखकर अगर फौरन निर्णय लेंगे तो उस विघ्न को जीत सकेंगे। जिसकी निर्णयशक्ति तेज होती है वह कभी हार नहीं खा सकते।

6) अव्यक्त स्थिति होने में व्यर्थ संकल्प और विकल्प ही विघ्न रूप बनते हैं। यदि बार-बार शरीर की आकर्षण में आ जाते हो तो उसका मूल कारण है बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है, उसमें बुद्धि मगन रहे।

7) कोई भी विघ्न आए तो उनको पेपर समझ पास करना है। बात को नहीं देखना है लेकिन पेपर समझना है। पेपर में भी भिन्न-भिन्न क्वेश्चन होते हैं - कभी मन्सा का, कभी लोक-लाज का, कभी सम्बन्ध का, कभी देशवासियों का ... लेकिन क्वेश्चन देखकर घबराना नहीं, उसकी गहराई में जाना। अव्यक्त वायुमण्डल बनाना तो विघ्न उस वायुमण्डल में स्वत: समाप्त हो जायेंगे।

8) जो शूरवीर होते हैं उन्हें कोई भी बात को पार करना मुश्किल नहीं लगता और समय भी नहीं लगता है। उनका समय सिवाए सर्विस के अपने विघ्नों आदि को हटाने में नहीं जाता है। अब समय बहुत आगे बढ़ गया है, इस हिसाब से अब तक छोटी-छोटी बातों में समय देना, यह भी बचपना है। अब पुरुषार्थ में बचपना नहीं चाहिए। ऐसे बहादुर बनो जो कैसी भी परिस्थिति हो, कैसा भी वायुमण्डल हो, उसमें पास होना है, दूसरों का भी सहयोगी बनकर पास कराना है।

9) परिवार में आत्मिक स्नेह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है, यह लेन-देन का हिसाब ठीक रहता है। दूसरों को सुख देने से अपने में सुख भरता है। देना अर्थात् लेना। दूसरों को सुख देने से खुद भी सुख स्वरूप बनेंगे। कोई विघ्न नहीं आयेंगे। दान करने से शक्ति मिलती है।

10) सम्पूर्ण बनने में विशेष व्यर्थ संकल्पों के रूप में ही विघ्न आते हैं, इससे बचने के लिए एक तो कभी अन्दर वा बाहर की रेस्ट न लो। अगर रेस्ट में नहीं होंगे तो वेस्ट नहीं जायेगा और दूसरी बात अपने को सदैव गेस्ट समझो। अगर गेस्ट समझेंगे और रेस्ट नहीं करेंगे तो वेस्ट नहीं जायेगा।

11) बाबा-बाबा की ढाल सदैव अपने साथ रखो, इस ढाल से सब विघ्न खत्म हो जायेंगे। साथ-साथ इकॉनामी करने से व्यर्थ संकल्प नहीं चलेंगे और न व्यर्थ संकल्पों का टक्कर होगा।

12) सदैव एकरस स्थिति रहे और विघ्नों को भी हटा सकें, इसके लिए सदैव दो बातें अपने सामने रखनी हैं। जैसे एक आंख में मुक्ति, दूसरी आंख में जीवनमुक्ति रखते हैं। वैसे एक तरफ विनाश के नगाड़े सामने रखो और दूसरे तरफ अपने राज्य के नज़ारे सामने रखो, दोनों ही साथ में बुद्धि में

रखो। विनाश भी, स्थापना भी। नगाड़े भी नज़ारे भी तब कोई भी विघ्न को सहज पार कर सकेंगे।

13) महारथी उसको कहा जाता है जो सदैव माया पर विजय प्राप्त करे, जिसके पास विघ्नों को हटाने की पूरी नॉलेज हो। महारथी अर्थात सर्वशक्तिमान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान। नॉलेज के आधार पर विघ्न हटाकर सदैव मगन अवस्था में रहने वाले। अगर विघ्न हटते नहीं हैं तो जरूर शक्ति प्राप्त करने में कमी है। नॉलेज ली है लेकिन उसको समाया नहीं है। नॉलेज को समाना अर्थात् स्वरूप बनना।

14) पुराने संस्कार ही सर्व के सहयोगी बनने में विघ्न डालते हैं, तो अपने पुराने संस्कारों को मिटाना है। अपने संस्कार मिटायेंगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगे। एक हम, दूसरा बाप तीसरी बातें देखने में आयेंगी भी लेकिन देखते हुए भी न देखो, अपने को और बाप को देखो। स्लोगन यही याद रखना - ''स्वयं को मिटायेंगे, सर्व के सहयोगी बनेंगे।''

15) जो बड़े आदमी होते हैं उन्हों के पास अपने हर समय की अपाइन्टमेंट की डायरी बनी हुई होती है। एक-एक घण्टा उन्हों का फिक्स होता है। ऐसे आप भी बड़े ते बड़े हो, तो रोज़ अमृतवेले सारे दिन की अपनी अपाइन्टमेंट की डायरी बनाओ। अगर अपने मन को हर समय अपाइन्टमेंट में बिज़ी रखेंगे तो बीच में व्यर्थ संकल्प समय नहीं ले सकेंगे। अपाइंटमेंट से फ्री रहते हो तब व्यर्थ संकल्प विघ्न रूप बनते हैं इसलिए समय की बुकिंग करने का तरीका सीखो।

16) विघ्न आवे भी लेकिन ज्यादा समय न चले। आया और गया – यह है शक्ति रूप की निशानी। जो अपने से सन्तुष्ट होता है वह दूसरों से भी सन्तुष्ट रहता है। जितना-जितना शुरू से लेकर मन्सा में, वाचा में, कर्मणा में आई हुई समस्याओं या विघ्नों के ऊपर विजयी बनते, उसी अनुसार विजय माला बनती है।

शिवबाबा याद है ? 08-3-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"सतयुगी राजाई लेनी है तो चाहिए-चाहिए को छोड़ राजाई संस्कार वाले रॉयल बच्चे बनो"

(दादी जानकी)

वैसे सारे दिन में मैं खुश रहती हूँ पर यहाँ (क्लास में) आने पर जो खुशी होती है, वह न्यारी प्यारी है। आपको भी ऐसे फील होता होगा! यह खुशी तो भगवान ने हम सबको वर्से में दी है। वर्से में मिली हुई खुशी है इसलिए बाबा कहते हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। खुशी खुराक भी है, खजाना भी है। वो तो शरीर छोड़ा, इस जन्म में जो पढ़ाई पढ़ी वो पूरी हो गयी। पढ़ाई का जिनको कदर है उनके दिल से पूछो, सारे कल्प में इतनी खुशी नहीं होगी जो अभी है क्योंकि पढ़ाई इतनी अच्छी है। एक एक बाबा का जो महावाक्य है उसमें कितनी ताकत है! जब ताकत है तो खुशी है। जब ताकत नहीं है तो खुशी नहीं है। फिर कहेंगे पता नहीं मुझे क्या हो गया है! पता नहीं क्या हुआ है... अरे खुशी क्यों गई?

75 साल से ब्रह्मा मुख से इतना अच्छा सुना है, जो आज भी कहते हैं सुनते रहें, सुनते रहें, सुनते-सुनते चले जायें। सुनते-सुनते अन्धे को भी जैसे चलना आ जाता है माना आँखें खुल जाती हैं। मैं कौन? मैं किसकी हूँ? और मुझे क्या करने का है यह आँख खुल जाती है। सारे दिन में इस स्मृति में रहने से कर्मेन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं। पहले हमारी कर्मेन्द्रियाँ हमारे वश में नहीं थी इसलिए 'चाहिए' 'चाहिए' कहते थे। अभी वो हमारे वश में हैं तो वो अभी 'चाहिए' 'चाहिए' नहीं करती। तो जिसकी कर्मेन्द्रियाँ अभी तक भी 'चाहिए' 'चाहिए' कहती हैं, वो बाबा की खुशी नहीं ले सकती हैं। सारी लाइफ में 'चाहिए' शब्द नहीं बोला है क्योंकि यह रॉयल्टी नहीं है, रीयल्टी नहीं है। 'चाहिए' बोलना माना राइट नहीं है, बाबा का सुख नहीं है, तृप्त आत्मा नहीं है। बुद्धि जब 'चाहिए' में है ना, तो इच्छा भी है ममता भी है। जो चाहिए ना जब तक वो नहीं मिला है ना, बुद्धि उसमें है। उसकी कर्मेन्द्रियाँ कभी वश में नहीं हो सकती हैं। मन और कर्मेन्द्रियों का आपस में कनेक्शन है।

मन-बुद्धि-संस्कार इसका भी नम्बर है। पहले संस्कार वा पहले बुद्धि नहीं कहते हैं। मन, बुद्धि, संस्कार कहते हैं। इस ज्ञान को मनन चिंतन में लाओ, पहले मन को बाबा में लगाओ। मन बाबा में लग गया तो मनमनाभव हो गये। मन इतना अच्छा बन गया है जो कर्मेन्द्रियों ने चाहिए चाहिए छोड़ दिया। चाहिए वाले को जितना भी मिलेगा फिर भी चाहिए चाहिए करेगा...

मरने तक भी चाहिए चाहिए करके मरेगा। हमने प्रैक्टिकल देखा है। तो मुझे यह बात बहुत जरुरी लगती है कि शरीर छोड़ने के समय चाहिए शब्द न निकलें। अच्छी-अच्छी आत्मायें शरीर छोड़ने के समय चाहना लेकर शरीर छोड़ती हैं। कोई ने चाहे बेटे को देखा और शरीर छोड़ा। हम कैसे शरीर छोड़ेंगे? सतयुग में कभी अकाले मृत्यु नहीं होगा। पुरानी खाल छोड़ी नई खाल ले ली, वो अभ्यास तब होगा जब अभी चाहिए को छोड़ेंगे। बाबा ने इतना स्नेह, प्रेम, शक्ति दी है इसलिए कुछ नहीं चाहिए। फिर सारा दिन इसको यह नहीं करना चाहिए, उसको यह नहीं करना चाहिए... मेरे को क्या करना है वो याद भी नहीं है, औरों के चिंतन की उसके पास लिस्ट लगी पड़ी है, यह ऐसा नहीं चाहिए, यहाँ ऐसा नहीं होना चाहिए। आपस में भी यही बात करेंगे क्योंकि और कुछ बात करने को आता ही नहीं है। हमको तो जैसे बाबा ने रॉयल्टी और रीयल्टी से पालना दी है, पढ़ाया है, वही दिल में समाया हुआ है।

मन भी ठीक तभी होता जब बुद्धि ठीक है, फिर संस्कार बदलते हैं। बुद्धि मन को आँख दिखाती है। बाबा क्या कहता है? मन इधर जायेगा ना, तो बुद्धि उसको शान्त करती है। कौन ऐसा पुरुषार्थ करता है? मन कुछ करे तो बुद्धि उसको चुप करके ठीक करती है। नहीं तो मन ऐसा है, गुलाम बना देता है। चलता रहेगा, शान्त नहीं होगा पर बुद्धि आँख दिखाती है। मन कहेगा मेरा संस्कार है ना, मैं क्या करूँ? बुद्धि संस्कारों को भी डाँटती है अन्दर, चुप कर पुराने संस्कार ले करके यहाँ तुम नहीं बैठ। अब संस्कार में है मैं आत्मा, मेरा बाबा... संस्कार में चला गया है। आत्मा शरीर छोड़के संस्कार लेके जाती है। अभी हम पुरुषार्थ ऐसा करते हैं, जो संस्कार ऐसे बन जायें, जो यहाँ अधर्म का नाश, सतधर्म की स्थापना के हम आत्मा निमित्त हैं। धर्म में सच्चाई है, सच्चाई है तो सब कुछ है। कोई अच्छा नहीं है, यह ख्याल आया तो भूल है क्योंकि आत्मा का ज्ञान ही ऐसा है, सिर्फ उसकी गहराई में जाये ना। तो कान द्वारा सुना है, आँखें खुल गई तीसरा नेत्र मिल गया। खुद को जाना, खुदा को जाना। कहाँ खुद, कहाँ खुदा दोनों का मेल हो गया। खुदा दोस्त ऐसा कोई होवे जो इतना प्रभु का प्यारा होवे, सच्ची दिल वाला होवे तो राजाई मिलेगी।

'चाहिए', 'चाहिए' वाले को 'चुहरा' कहा जाता है, चुहरा माना सफाई करने वाला। वहाँ भी कोई तो होंगे बाथरूम सफाई करने वाले। कोई फिर महलों में रहने वाले होंगे। तो चाहिए चाहिए, बहुत बहुत निकम्मा बनाने वाली है। कोई काम के नहीं रहेंगे। तो माइन्ड नहीं करना, जैसे मैं अपने को सुधारती हूँ ना, तो आप मेरे भाई बहन हैं इसलिए जी चाहता है कि सभी ऐसे राजाई पद पावें। जब सतयुगी राजाई मिल रही है, अभी अभी मिल रही है तो क्यों न ले लूँ। पहले तो गफलत और अलबेलाई वा इच्छा वश समय गँवाया, लेकिन आज भी कोई सुजाग हो जावे तो वो पद पावे। संगम पर जगतमाता, जगतपिता वो मेरा रीयली मात-पिता है, सतयुग में भी ऐसे मात-पिता नहीं मिलेंगे। अच्छे होंगे, पर ऐसे नहीं होंगे। जिसका बालक बनने से इतना अविनाशी सुख मिला है। सोते-जागते, खाते-पीते, स्नान करते खुश रहना है। खुशी भी सदाकाल के लिए है इसलिए बाबा ने कहा सदा शब्द 'सदा' याद रहे।

जब मैं बांधेली थी तो दिन-रात यही लगन रहती थी कि कब बाबा के पास जाऊं, बाबा के पास जाऊं...। कोई तरीका ढूँढ लेती थी, कोई मुझे पकड़े नहीं, कोई मुझे देखे नहीं इसलिए रात को 11 बजे निकल करके दूसरे दिन सुबह में बाबा के पास आयी, कराची में बाबा मुरली चला रहा था मैं वहाँ सामने खड़ी थी। तभी मुझे बाबा ने कहा जनक तुम आ गयी! (मेरा नाम तो जानकी था) तो मैंने कहा अभी कहते हो आ गयी, इतना समय कहाँ थे? तो बाबा उठके मुझे वहाँ से लेके आया। भावना से पावर आ जाती है, भगवान कहे तू मेरी, मैं कहूँ तू मेरा। तो मैंने कहा तू मेरा है, अगर तू मेरा होता तो मुझे थोड़ेही छोड़ देता। तो यह बाबा से युद्ध नहीं पर प्यार है हुज्जत है, क्या बातें करें बाबा से? आपसे बातें करने का यह आधा घण्टा मिलता है और तो किसी को कोई टाइम ही नहीं है बात करने का, पर बाबा से तो मुझे सारा दिन रात सोते भी बाबा, जागते भी बाबा... तो बाबा बच्चा कहे न कहे, मैंने बाबा कहा तो खुश हो गया। इतने में खुश होता है, कुछ भी न करो सिर्फ बाबा कहो तो खुश हो जाता है। तो भगवान को खुश करना... मनुष्य यज्ञ, तप, दान, पुण्य कितना कुछ करते हैं, तो भी नहीं मिलता है बिचारे भटकते रहते हैं। गंगा में नहाते, स्नान करते रहते हैं फिर भी पावन नहीं बनते हैं।

पतित-पावन सर्वशक्तिवान बाबा मिला है वो मेरा है, कहता है तुम भी पतित-पावनी बन जाओ ना। पतितों को पावन बनाने का कार्य करेंगी तो मैं तुम्हारा नाम बाला करूँगा। सन शोज़ फादर। तो जो बाप का नाम बाला करेगा बाबा उसका नाम बाला करेगा। गुल्जार दादी को देखो यह सोचती भी नहीं है कि बाबा का नाम बाला करना है, पर अन्दर से बाबा कौन है वो दिखाई पड़ता है। कैसा है, कौन है, क्या करता है, कैसे करनकरावनहार है, सारे यज्ञ को देखो। ब्रह्मा बाबा साकार में सामने था तो उसको निमित्त बनाया, पर उसने कभी नहीं कहा यह मैंने किया, बाबा ने किया। आज दिन तक डेगरियाँ चढ़ती रहती हैं, तो यह सब कौन करता है? जिनको निमित्त बनाता

है, जो करता है वो भाग्यवान है तब बाबा ने कहा भाग्य तुम्हारा बाप के हाथों में है यानि जितना करते हैं या कराने के निमित्त बनते हैं, तो बाबा रिटर्न में उनको प्यार, शक्ति देता है। तो मैं देखती हूँ कौन-कौन 'चाहिए', 'चाहिए' छोड़ता है। अच्छा, ओम् शान्ति।

"निश्चयबुद्धि से मायाजीत, नष्टोमोहा बनने वाले किसी के शरीर छोड़ने पर दु:खी नहीं होते"

(दादी जानकी)

सभी खुशराज़ी हैं ना! बी.के. जैसा, ब्रह्माकुमार कुमारी जैसा खुशराज़ी सारे संसार में कोई नहीं है। बाबा ने जो खुशी दी है उसकी बहुत वैल्यु है। ज्ञान मार्ग में एक एक बात इतनी अच्छी, स्पष्ट मिली है इसलिए सदा राज़ी हैं, नाराज़ नहीं होते हैं। कोई ने कुछ कहा, किया अच्छा है। जो हर राज़ को समझकर खुश हो रहते हैं वह हेल्दी वेल्दी रहते हैं। माइन्ड से हेल्दी हैं तो शरीर भी हेल्दी है। जिसका माइन्ड हेल्दी नहीं है तो शरीर भी बिचारा... और शरीर कैसा भी हो पर माइन्ड अच्छा हो तो शरीर को अच्छा कर देता है। तो हेल्दी कैसे हुए? वेल्दी भी बहुत हैं ना, ज्ञान का खज़ाना है, इसलिए हैपी हैं। कभी दुनिया में कुछ भी हो जाये, विनाश आ जाये तो भी हम खुश होंगे।

जब से बाबा को साक्षात्कार हुआ विनाश का और विष्णु का। इस साक्षात्कार को 75 साल हो गया तो कईयों को संशय आता है, पता नहीं विनाश कब आयेगा! बाबा तो कहता है विनाश आया कि आया। अगर इतना समय न होता तो इतने बाबा के बच्चे कैसे पैदा होते, तो भगवान जानता है। नई दुनिया स्थापन करना और उसमें आने वाले बच्चों को लायक बनाके पालना देना, यह बाबा का ही पार्ट है। हम सब बाबा के बच्चे हैं, आत्मायें हैं तो भाई भाई हैं, ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी हैं तो बहन भाई हैं। अब जब याद में बैठे थे तो अन्दर से यही दिखाई पड़ता है, सब आत्मायें हैं... पर ऐसी आत्मिक स्थिति हो जो मेरे को देखके वो भी अपने को आत्मा समझना शुरू कर दे। मेरा शरीर दिखाई न पड़े, इसके लिए अपना भी शरीर भूल जाये। अभिमान, देह-अभिमान को जिसने खत्म किया, वही राजाओं का राजा बनेगा। बाबा इसीलिए राजयोग द्वारा रॉयल्टी सिखा रहा है। कभी दिल में, मन में भूल से भी कोई संकल्प न आये यह मेरा है, मैं फलाना हूँ, मेरे पास यह मकान है, दुकान है...।

प्रैक्टिकली बाबा ने जो बोला है, सो किया कराया है तब प्रवृत्ति मार्ग वाले इतने बाबा के बच्चे निकले हैं। पहले समझते थे ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना माना घर छोड़ना, बाबा के पास आ करके बैठ जाना। आज बाबा ने कहा, कहाँ भी रहे वो अगर 7 दिन का कोर्स अच्छा करे, मुरली रोज़ पढ़े और अमृतवेला अच्छा करे फिर बाबा की याद में खाना बनाके खाये, खिलाये। भोजन शुद्ध हो, एक एक कणे-दाने का भी कदर हो, भावना से स्वीकार करे.. तो बहुत आगे जा सकता है। बाबा जब हमें छोटे बच्चों के समान प्यार से मेरे मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, कल्प पहले वाले बच्चे कहता है तो हमको खींच होती है, बुद्धि देह की आकर्षणों, सम्बन्धों से न्यारी हो जाती है क्योंकि भगवान कहे मेरे मीठे बच्चे... यह कितनी बड़ी बात है! फिर मुरलियाँ सुनते हैं तो बाबा के लिए प्रेम बहुत है क्योंकि मुरली में जादू है, परिवर्तन होता है ना। माया ने बुद्धि का ताला बन्द कर दिया, कर्म, अकर्म, विकर्म की गति भुला दी जिससे पता ही नहीं पड़ा यह क्या कर्म कर रहे हैं? विकारों वश थे लेकिन बाबा ने मुरली द्वारा अच्छी तरह से बुद्धि का ताला खोल दिया, तो बाबा से प्रेम बहुत हो गया।

भागवत में गोप-गोपियों के प्रेम का गायन है, गीता में ज्ञान है। स्वयं भगवान हमको गीता ज्ञान दाता दिव्य बुद्धि दे रहा है, तो हम भगवान को देख सकते हैं, जान सकते हैं, भगवान से जो पाना है वो पा सकते हैं इतनी बाबा से बुद्धि अच्छी मिली है। मन को ठीक करने वाली भी बुद्धि है, संस्कारों को चेन्ज करने वाली भी बुद्धि है। इस पाँच तत्वों से बने हुए शरीर को चलाने वाली आत्मा है, आत्मा क्या है? मन-बुद्धि-संस्कार... मन का कर्मेन्द्रियों से कनेक्शन गहरा है। विकारों वश मन कर्मेन्द्रियों के वश हो गया। कर्मेन्द्रियाँ चंचल बन गयी, मन को अपना बना लिया, बुद्धि खलास हो गयी, संस्कार विकारी बन गये। अभी बाबा प्रेम से समझा, समझाके, निर्विकारी, निरहंकारी बना रहा है। ऐसा निर्विकारी जैसे मेरा बाबा। तो अपने में बहुत निश्चय बैठ गया, निश्चय से प्रीत बुद्धि। पहले प्यार, फिर प्रेम,

फिर निश्चय से प्रीत बुद्धि विजयंती..... नशा है, कमाल है, बाबा आपकी।

प्राणेश्वर बाबा ने प्यार दे दे करके हमारा प्राण ले लिया अर्थात् अपना बनाया, प्यार में हमें जीते जी मारा। सारे कल्प में ऐसा जीते जी मरना नहीं होता है। बाबा के प्यार में हमको जीते जी मरने में बहुत खुशी हुई इसलिए अभी भी हम मरे ना, दु:ख नहीं होता है। मरे शब्द ही नहीं है, शरीर छोड़ा, जैसे बाबा अव्यक्त हुआ। मम्मा ने भी कैसे बाबा की यादों में शरीर छोड़ा, सुबह नास्ते के टाइम मम्मा ने सभी को अपने हाथों से अंगूर खिलाया, दृष्टि दी, बाबा बाजू में साथ में बैठा था। फिर शाम को चार बजे देह त्याग किया। जरा भी दु:ख नहीं हुआ क्योंकि अधीन नहीं हैं, दु:ख करने का संस्कार दु:खहर्ता ने खत्म कर दिया है। कोई ने भी शरीर छोड़ा, टाइम आया ओके, अगर हम अच्छे वायब्रेशन रखेंगे तो वो आत्मा भी अच्छा शरीर लेगी। और अगर हम रोयेंगे पीटेंगे तो हम उसके दुश्मन ठहरे क्योंकि वह आत्मा भी दु:खी होगी, यह तो कलियुगी मनुष्यों का रसम-रिवाज है रोना-पीटना। ब्राह्मण आत्माओं को भगवान ने निश्चय बुद्धि से मायाजीत, मोहजीत बना दिया है। मायाजीत की पूरी निशानी है मोहजीत।

गीता में लिखा है नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। प्यार, प्रेम, प्रीत, अभी ईश्वरीय स्नेह से सम्पन्न बन रहे हैं। हरेक बाबा के बच्चे को है सम्पन्न बनना है तो मुझे बनना है, बनाने वाला बना रहा है। तो ईश्वरीय स्नेह से जो आपस में लेन-देन है, सम्बन्ध है.. वह सम्पन्न बनने की दृष्टि का है। जो बाबा ने मेरे को दिया है वह मेरे पास भले हो अच्छा है, भाग्यवान हूँ पर सबको मिले, दिल बड़ी हो गयी है। ऐसे नहीं बाप का मुझे मिला है तो मेरे लिए ही है। भगवान ने हमारी बुद्धि को इतना विशाल बेहद का बना दिया है। तो सारी हदें खत्म कर देनी है। जैसे खुद बेहद का बाबा है, बेहद बादशाही देने वाला है। बुद्धि को इतना शुद्ध शान्त श्रेष्ठ बनाओ, जैसे भगवान के साथ रहने वाली सत्य आत्मा बन गई है। निमित्त यहाँ पार्टधारी हैं, पर बन रहे हैं सूक्ष्म, अव्यक्त, सम्पूर्ण, सम्पन्न। सूक्ष्म में अन्दर भावना है, घर जाने के पहले ऐसा बन जायें और कुछ काम नहीं है। हाथ-पाँव से काम करते हैं तभी तो तन्दुरूस्त हैं। अगर हाथ-पाँव से काम न करें तो लूले-लंगड़े बन जायेंगे फिर एक्सरसाइज़ करनी पड़ेगी। नहीं तो मैं समझती हूँ जो सेवा में सदा बिजी रहते हैं उन्हें एक्सरसाइज करने की भी जरुरत नहीं है। कोई भी यहाँ ऐसे मोटा मोटा नहीं बनता है, नहीं क्योंकि सेवा ही ऐसी है, इतनी सेवा जिसने की है, जो दिल से सेवा करता है वो मजबूत रहता है। ओम् शान्ति।

14-11-13

"इस परिवर्तन भूमि में अपनी कमी-कमजोरी छोड़कर जाना, दृढ़ संकल्प करके जाना तो बाबा की मदद मिलती रहेगी" (गुल्जार दादी)

ओम् शान्ति। बाबा का हर एक बच्चा अपने घर मधुबन में पहुँच गया है और यह मधुबन कितनी आत्माओं को रिफ्रेश करता है, वो तो अनुभव आप सबने अपने अपने अनुसार किया होगा। बाकी आप सबको हम भी मुबारक दे रहे हैं, जो पहले बारी आये हैं वह अपने घर में पहुँच गये हैं उसकी मुबारक हो। साथ में जो कई बार आये हैं अभी फिर भी बाबा से मिलने बाबा के घर में आये हैं, उन सभी को बहुत बहुत बहुत मुबारक है।

मधुबन में आते ही सभी ने अनुभव किया होगा कि मधुबन में बाबा को याद करना नहीं पड़ता लेकिन चलते-फिरते स्वत: ही बाबा की याद आती है। मधुबन निरंतर योगी का अनुभव कराता है। तो आप सबने भी ऐसा अनुभव तो किया ही होगा क्योंकि सबकी नज़रों में शक्लों में बाबा की याद समाई हुई है। बाबा कहते ही कितना प्यार आता है क्योंकि बाबा ने हम सबको क्या से क्या बना दिया! साधारण आत्माओं को विश्व का मालिक बना दिया। यह तो सभी जानते ही हैं कि अभी बाबा के दिल के अमूल्य रत्न बन गये और भविष्य में फिर ताजधारी बनके राज्य-अधिकारी बनेंगे। तो सबके दिल में सबके नयनों से मेरा बाबा, मीठा बाबा दिखाई दे रहा है। भले इतने सब हैं लेकिन हरेक के मन से मेरा बाबा ही निकलता है। और बाबा में जितना मेरापन लायेंगे उतना सहज याद और बाप समान बन जायेंगे क्योंकि मेरा कभी भूलता नहीं है। कितने बारी बाबा कहता है बॉडी कॉन्सेस से सोल कॉन्सेस हो जाओ फिर भी बॉडी कॉन्सेस हो जाते हैं।

लेकिन बाबा की याद में जब बैठते हैं तो बाबा ने कहा और हमारा अनुभव हुआ। दिलाराम हमारे दिल को जानते हैं और हरेक ने बाबा को दिल में बिठा दिया है। सभी के मुख से मेरा बाबा निकलता है। सिर्फ बाबा नहीं कहते लेकिन ''मेरा बाबा है'', यह कहते। तो मेरा भूलना तो बहुत मुश्किल है। अभी सिर्फ बाबा कहते यह जो देह है उसका ज्ञान तो मिला है, इसको भूल जाओ फिर भी कहते हैं बाबा बीच-बीच में देहभान आ जाता है। तो बाबा को याद करना वास्तव में कोई मेहनत नहीं है। मेरा है ना, देखो, शरीर मेरा है तो भूलता कम है। समय प्रति समय मनुष्य तन है उसमें बुद्धि चली जाती है, ऐसे ही मेरा बाबा है, तो मेरी चीज़ भूलनी नहीं चाहिए। और बाबा कितने प्यार से एक एक को कहते हैं बच्चे, तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा ही हूँ और हमें भी स्मृति आ गई यह तो मेरा बाबा है। और मेरा कह दिया मान लिया, अनुभव कर लिया तो मेरे को भूलना बहुत मुश्किल है।

तो अभी सभी के दिल में कौन? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और यही दिल में बिठाने से जो बाबा हमसे चाहता है बच्चे मेरे जैसे बन जायें, ऐसे ही सभी बाबा के समान बाबा ने जो कहा वो हमने किया। एक एक शब्द बाबा का अपने जीवन में समा करके हम भी बाबा के समान बनेंगे जरुर। बन भी रहे हैं और बनेंगे भी क्योंकि बाबा से प्यार है ना। तो जिससे प्यार होता है उसको भूलना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता है। तो बाबा को हम दिल से प्यार करते हैं, बाबा से हम सबका दिल का 100 परसेन्ट प्यार है। जिससे कुछ मिले उससे ही तो प्यार होता है। तो बाबा ने हमें क्या क्या दे दिया, हमारे को मालूम ही नहीं था इतना हमको मिलेगा लेकिन बाबा ने इतना दिया है जो हम सभी मालामाल हो गये हैं। तो बाबा के प्यार ने हम सबको भी सबका प्यारा बना दिया है। सबके प्यारे हो गये हैं ना! किसी से वैर विरोध नहीं है। हर आत्मा अपने संस्कार से बाबा के बने हैं, बाबा के साथ लगन लगाई वो लगन वाले जरुर बाबा के समान बन करके बाबा के साथ चलेंगे।

बाबा का साथ बहुत प्यारा है। एक बाबा शब्द में भी बहुत प्यार है। बाबा ने हम सबको इतना प्यार दिया है, इतनी मेहनत की है एक एक बच्चे के ऊपर जो बच्चा कभी भूल नहीं सकता है। बाबा ने जो प्यार दिया है हमको इतना अच्छा बनाया है वो कभी भूल सकता है? नहीं भूल सकता है, यही प्यार हमको दो युग बहुत आनन्द और प्रेम दिलायेगा। लेकिन उसके पहले अभी जो बाबा चाहता है वो करना है, बस। जो बाबा ने मुरली में कहा वो करने से बाबा जो चाहता है वो चाहना पूरी होती है। और हम भी बहुत खुश होते हैं। जब रात्रि को देखते हैं, जो बाबा ने कहा वही हमने सारा दिन किया है तो अपने ऊपर भी बहुत खुशी होती है। अगर नहीं करते हैं तो शक्ल थोड़ी बदलती है। लेकिन मधुबन में न चाहते हुए भी सबका योग लग जाता है क्योंकि वायब्रेशन ऐसा है, जो भी यहाँ आते हैं उन सभी के मन में मीठा बाबा, प्यारा बाबा, बाबा ही बाबा होता है। और बाबा जो मुरली चलाते हैं, वो मुरली हमारे लिये बहुत अच्छा साधन है, बाबा ने कहा और हमने सारा दिन किया। हर मुरली में चारों ही सबजेक्ट्स होते हैं, उन चारों सबजेक्ट्स को ध्यान में रख करके हम उसी प्रमाण अपने आपको चलायें तो बहुत इज़ी है, मेहनत नहीं है क्योंकि बाबा से प्यार तो हम सभी का है।

तो आप सभी मधुबन में आकर मधुबन से क्या गिफ्ट ले जायेंगे? वो गिफ्ट शॉल, साड़ी, चादर वगैर वह तो कॉमन बात है। लेकिन कौन-सी गिफ्ट ले जायेंगे? अपने दिल में बाबा को समाके जाना, जो दिल से निकले ही नहीं। दिलाराम है ना। दिल में आराम कराने वाला है इसलिए जो भी यहाँ से जायें तो एक बात जरुर करना, जो भी आपकी कमी हो तो यहाँ से लेके नहीं जाना लेकिन बाबा के आगे दे करके जाना, अपने को मुक्त करके जाना क्योंकि यहाँ मधुबन का वायुमण्डल, मधुबन का संग, मधुबन में बाबा की मुरली आपको मदद करेगी। अगर कोई भी ऐसी बात मन में हो तो लेके नहीं जाना, खाली दिल करके जाना। साफ दिल में बाबा को बिठाके जाना और बाकी जो दिल में ऐसी वैसी बातें हो ना, वो यहाँ छोड़के जाना। छोड़ना आता है ना? तो जो कमी कमजोरी वहाँ नहीं जा सकी, कोशिश तो वहाँ भी करते होंगे लेकिन यहाँ बाबा की डायरेक्ट दृष्टि है, बाबा का निवास है इसलिए यहाँ दृढ़ संकल्प करेंगे, तो सहज हो जायेगा। सिर्फ संकल्प नहीं करना - हो जायेगा, करता तो हूँ... नहीं, करना ही है इसको कहा जाता है दृढ़। तो ऐसे दृढ़ संकल्प करके जायेंगे तो आपको मधुबन का वायुमण्डल भी मदद देगा। यहाँ बगीचे और वृक्ष बहुत हैं, तो वृक्ष के नीचे अगर कुछ रह गया हो तो उसको छोड़के जाना, लेके नहीं जाना क्योंकि वैसे भी कहीं यात्रा पर या ऐसे शुभ कार्य के स्थान पर जाते हैं तो कुछ न कुछ छोड़के ही आते हैं। तो यह मधुबन तो बाबा का घर है, आपका भी घर है लेकिन यह घर ऐसा है जो सम्पन्न बना देता है। इसीलिए यहाँ वरदान मिलेगा, अगर आपने दिल से यहाँ कोई भी ऐसी बात छोड़ी, तो जब भी आप मधुबन याद करेंगे तो वो चीज़ छोड़ने में यह मदद करेगा, क्योंकि यहाँ बाबा का वायुमण्डल है, जो भी आते हैं सभी में शुभ भावना होती है इसलिए वह मदद आपको बहुत मदद करेगी, तो कुछ भी ऐसा लेके नहीं जाना,

जो छोड़ने की चीज़ है वह यहाँ ही छोड़के जाना। अंश मात्र भी लेके नहीं जाना। बाबा को दे दी, मधुबन में छोड़के गये तो फिर वापस कैसे लेंगे?

तो बाबा जो मेरे बच्चे कहके बहुत महिमा करता है। वही रूप यहाँ अनुभव करके वहाँ जाना। सहज है ना? जो भी गलती है या कोई संस्कार है, वह छोड़ना मुश्किल तो नहीं लगता? यहाँ बाबा की और ब्राह्मणों की मदद है, कितना वायुमण्डल शुभ है, कितना सब पुरुषार्थ में सफल हो रहे हैं। तो जो भी ऐसी बातें हो वो यहाँ छोड़के जाना। और यहाँ की जो विशेषता है बस, सारा ही दिन सबके मन में बाबा ही बाबा... रहा ना! और कोई बात आई क्या? नहीं ना। जिन्हें वहाँ बाबा की याद थोड़ी मुश्किल लगती थी लेकिन यहाँ बाबा की याद सहज आती रही... वो हाथ उठाओ। कोई ने नहीं भी उठाया है लेकिन अभी भी आप बाबा से प्रॉमिस करो, और हिम्मत रख करके कोई भी कमी छोड़ो फिर वहाँ आयेगी तो आपको मदद मिलेगी। तो जैसे आये थे वैसे ही लौटके नहीं जाना, कुछ न कुछ अपने में परिवर्तन करके जाना। यह हो सकता है? परिवर्तन करके जा सकते हैं? देखो, सभी ताली बजा रहे हैं। यहाँ छोड़के जाने में सहज है क्योंकि बाबा की सकाश है ना! तो जो दिल से छोड़ता है उसको सफलता जरुर मिलती है। तो परिवर्तन करके जाना, वही चीज़ लेके नहीं जाना। यह है ही परिवर्तन भूमि, तो यहाँ दिल से परिवर्तन करके जाना। दिल से देंगे तो बाबा दिलाराम है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

सन्तुष्ट रहो और सन्तुष्टता का दान करो तो बाबा से वरदान मिलेगा

1) बाबा कहते आप बच्चे सन्तुष्टता की खान हो क्योंकि बाबा ने हमें सर्व प्राप्तियाँ करा दी हैं ऐसी कोई प्राप्ति नहीं जो हम बाबा से कुछ मांगे। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु। तो फिर हम सन्तुष्टता की खान नहीं रहेंगे तो क्या रहेंगे? हर एक समझे कि मुझे व्यक्तिगत यह वरदान बाबा से मिला है।

2) मैं हूँ सन्तुष्टता की खान और खान से जितना भी कोई माल निकाले, वह दूसरों को भी दे तो वह भी सन्तुष्टता की खान से माल भरकर सन्तुष्ट हो जाए। इतना हम सन्तुष्ट रहें और अपनी सन्तुष्टता से हम दूसरों को भी सन्तुष्ट रखें। लक्ष्य रखो कि मुझे हर एक को 100 परसेन्ट सन्तुष्ट करना ही है। निगेटिव कभी नहीं सोचो। जब मन में कोई बात निगेटिव आती है तो आगे वाले को सन्तुष्ट नहीं कर सकते। फिर वह नाराज़ होगा। जब कोई नाराज़ होता तो आपस में मतभेद होता। फिर आपस में शुभ भावना नहीं रहती।

3) आज तुमने किसी को सन्तुष्ट नहीं किया तो कल वह भी नहीं करेगा। यह नेचुरल एक रिटर्न हो जाता है। फिर उससे मन भारी हो जाता फिर किसको सुनाऊं, क्या करूँ, जैसेकि कोई को हल नहीं मिलता और परेशान होते, परेशान होने से फिर माया के दूसरे-दूसरे संकल्प विकल्प चलते। और जब दूसरे संकल्प विकल्प चलते तो कोई ना कोई संग लग जाता। और कुछ नहीं होगा तो लौकिक याद आयेगा। फिर पुरानी दुनिया याद आयेगी।

4) हर एक लक्ष्य रखे कि मुझे सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है, इसके लिए चाहिए त्याग। मुझे दूसरों को सन्तुष्ट करना है – यह करो दान। जो दूसरों को करेगा दान, उनको बाबा देगा वरदान। और वह वरदान फिर बन जाता है सन्तुष्टता की खान। तो दूसरों को सन्तुष्ट करने के लिए स्वयं को अपना त्याग करना पड़ता है।

5) बाबा ने जो कहा है बेहद के वैरागी बनो, तो त्याग करने में ही वैराग्य है। कुछ भी छोटी मोटी बातें होती हैं, उनका भी त्याग करो। नहीं तो आपस में जो स्नेह-सहयोग चाहिए वह सब टूटता जाता है, तो सन्तुष्टता भी टूटती है क्योंकि मन मैला तो स्नेह भी टूटा फिर सहयोग भी नहीं मिला, तो काम भी नहीं हुआ। तो सन्तुष्टता टूट गयी लेकिन अगर हमारा लक्ष्य सन्तुष्ट करने का हो, हमें हर हालत में सबको सन्तुष्ट करना ही है। दूसरे की सन्तुष्टी में ही मैं सन्तुष्ट हूँ। यह लक्ष्य हो तो फिर आप देखो स्थिति आपकी कितनी ऊंची बन जाती है। जिसको कहते हैं कि अनासक्त होने से निरसंकल्प होते हैं।

6) ज्ञान कहता है पहले मर्जी शब्द का त्याग करो। कई कहते हैं मेरी मर्जी नहीं है, यह शब्द ही रांग है। दूसरों को सन्तुष्ट करने में ही मैं सन्तुष्ट हूँ। मुझे हर हालत में सन्तुष्ट रहना है। बीमारी आदि में भी न किसी से तंग होना है, न किसी से नफ़रत करना है। सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है। अच्छा।